# नए तरीक़ों से सीखना–सिखाना | सम्बन्धों को मज़बूत करना

वर्धना पुरी, ज्योत्स्ना लाल और हैदर मेहदी रिज़वी

## पृष्ठभूमि

भारत में मार्च, 2020 के तीसरे सप्ताह में शुरू हुआ लॉकडाउन शायद दुनिया का सबसे सख़्त लॉकडाउन था। शिक्षा के क्षेत्र की बात करें तो आठ महीने से अधिक समय हो गया है और स्कूल व आँगनवाड़ी अभी भी बन्द हैं। दिल्ली की निज़ामुद्दीन बस्ती के बच्चे लॉकडाउन से गम्भीर रूप से प्रभावित हुए हैं। इन बच्चों की लगभग सारी औपचारिक शिक्षा और इनके पोषण का कुछ हिस्सा स्कूल और आँगनवाड़ी केन्द्रों की सेवाओं पर निर्भर करता है। देश के अन्य भागों से मिल रही जानकारी से भी इस बात की पुष्टि होती है, हालाँकि इसके दीर्घकालिक प्रभाव धीरे-धीरे सामने आएँगे।

दूसरा झटका तब लगा जब निज़ामुद्दीन बस्ती में स्थित तब्लीगी जमात मुख्यालय को कोविड-19 के फैलने का स्रोत माना गया और पूरी बस्ती को सील कर दिया गया। अब बच्चों के पास स्कूली शिक्षा का कोई विकल्प नहीं बचा। हक़ीकत तो यह है कि इन बच्चों के पास सीखने की कोई और व्यवस्था नहीं थी। ऐसा मालूम होता था कि सीखने के लिए एकमात्र प्रेरणा जो कुछ भी वह ख़ुद से कर सकते थे उससे या फिर टीवी देखकर मिल रही थी।

निज़ामुद्दीन बस्ती के लिए आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (AKTC) कोई नया नाम नहीं है। हम 2007 से निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव नामक एक पहल को बस्ती में अमल में ला रहे हैं। यह एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी (Public-private partnership) है। इसका उद्देश्य विरासत संरक्षण को समुदाय के लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रारम्भिक प्रयास के रूप में इस्तेमाल करना है। हमारा शिक्षा-कार्यक्रम निज़ामुद्दीन बस्ती में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक बच्चों की पहुँच सुनिश्चित करने का कार्य 2008 से कर रहा है।

लॉकडाउन और उसके बाद भी इस क्षेत्र के बन्द रहने के कारण समुदाय को बहुत ज़्यादा परेशानियाँ झेलनी पड़ीं। ख़ासकर उन 78 प्रतिशत लोगों को जो अनौपचारिक क्षेत्रों में काम करते थे और दैनिक मज़दूरी पर निर्भर थे। आगा खान एजेंसी* ने इस स्थिति में वहाँ सूखा राशन बाँटा, जागरूकता पैदा की, मास्क बाँटे और सरकार को सीरो-सर्वेक्षणों में सहयोग किया। सामुदायिक सम्पर्क के माध्यम से हमने उन संवेदनशील परिवारों की पहचान की जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता थी।

महामारी का अन्त होता नहीं दिख रहा था। स्कूल और आँगनवाड़ियों के निरन्तर बन्द होने से बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ रहा था। डेटा तथा उपकरणों तक उनकी पहुँच सीमित या फिर बिलकुल नहीं थी। इन सब स्थितियों को देखकर आगा खान फ़ाउण्डेशन ने सामुदायिक शिक्षकों के माध्यम से अभिभावकों के साथ काम करने का फ़ैसला किया ताकि वे सीखने में अपने बच्चों की मदद कर सकें।

## महामारी पर प्रतिक्रिया

शैक्षिक सेवाओं को जारी रखना अब पहले से भी ज़्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया था, क्योंकि स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चों के लिए सीखने के ऑनलाइन साधनों का प्रबन्ध करना सम्भव नहीं था। आँगनवाड़ियों के बच्चों के लिए तो ऐसा कर पाने की सम्भावना और भी कम थी। अप्रैल 2020 में हमने व्हॉट्सऐप के माध्यम से काम शुरू किया क्योंकि तब निज़ामुद्दीन बस्ती नियंत्रण क्षेत्र (containment zone) में थी। लेकिन जल्द ही एहसास हुआ कि यह रणनीति अपर्याप्त थी। प्रारम्भिक सर्वेक्षण से पता चला कि सिर्फ़ 250 बच्चों के पास ही स्मार्टफ़ोन की सुविधा है। यह संख्या आगा खान फ़ाउण्डेशन के स्कूल सुधार कार्यक्रम के तहत शामिल बच्चों की कुल संख्या के 20 प्रतिशत से भी कम थी। हालाँकि वर्तमान में लागत कम करने के लिए ऑनलाइन और ऑफ़लाइन दोनों विधियों का उपयोग किया जा रहा है।

प्रारम्भ में आगा खान फ़ाउण्डेशन टीम ने बच्चों को व्हॉट्सऐप के ज़रिए कार्य भेजे। अवधारणाओं को समझाने के लिए वीडियो बनाए ताकि सीखने की प्रक्रिया जारी रह सके। हालाँकि जल्द ही पता चला कि यह शिक्षकों और बच्चों दोनों के लिए संघर्षपूर्ण था। क्योंकि प्रौद्योगिकी के माध्यम से बच्चों के साथ जुड़ने और उन्हें सिखाने के लिए प्रौद्योगिकी की सूक्ष्म समझ होनी चाहिए। इस बात पर विचार करना ज़रूरी था कि शिक्षकों द्वारा केवल निर्देश/तस्वीरें/वीडियो आदि भेजने के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने की बजाय इसे सीखने की एक पारस्परिक प्रणाली कैसे बनाया जाए। एक और सोचने वाली बात यह थी कि ज़्यादातर मामलों में बच्चे केवल रात में ही मोबाइल का उपयोग कर पाते थे, जब उनके अभिभावक

(ज़्यादातर पिता) काम से लौटकर आते थे। इस पर महँगे डेटा शुल्क (ख़ासकर तब जब आमदनी में कमी हो रही हो) की वजह से कई बच्चे अपने किए हुए कार्यों को शिक्षकों को वापिस भेजने के लिए अपलोड नहीं कर पाते थे। इससे शिक्षक बच्चों के सीखने और उनकी प्रगति के बारे जान नहीं पाते थे। ऐसा लगता है कि सरकारी कार्यक्रम इस ज़मीनी हक़ीक़त की समझ नहीं रखते।

जब यह स्पष्ट हो गया कि सभी बच्चे ऑनलाइन माध्यम से नहीं जुड़ सकते, तो आगा खान फ़ाउण्डेशन ने सीखने को बढ़ावा देने के लिए समुदाय आधारित गतिविधियाँ करने का फ़ैसला लिया। सामुदायिक शिक्षकों ने आवश्यक सावधानियों के साथ व्यापक सर्वेक्षण किए और उन बच्चों की पहचान की जिन्हें सहायता की आवश्यकता थी। चूँकि यह मुख्य रूप से प्रवासी इलाक़े हैं तो कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ गाँव वापस चले गए थे। मूल सर्वेक्षण (बच्चों के जाने से पहले किया गया) में से जो बच्चे यहाँ रुके हुए थे उनमें से तीन प्राथमिक स्कूलों में दाख़िल 700 बच्चों और सात आँगनवाड़ी केन्द्रों में दाख़िल 120 बच्चों को घर और सामुदायिक शिक्षा के लिए चिह्नित किया गया।

**नए तरीक़े अपनाए**

कोरोना-पूर्व शिक्षण के जो तरीक़े थे वह सीखने को आकर्षक बनाने के लिए तैयार किए गए थे। इनमें कक्षा में प्रायोगिक गतिविधियों का इस्तेमाल करना और बच्चों के अनुभवों को सीखने के केन्द्र में रखना शामिल था। असामान्य समय (जिसमें वर्तमान समय भी शामिल है) में भी बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में अत्यधिक परिवर्तन नहीं होता है। यदि बच्चे सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रियाओं में जुड़े हों, तो वे सीखेंगे। लिहाज़ा, अब चुनौती ऑनलाइन माध्यम से सीखने के नए तरीक़ों में अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को भागीदार बनाने की थी। यही बात शिक्षक बच्चों के घरों में दोहराने की कोशिश कर रहे थे।

कार्य शुरू हुआ प्राथमिक स्तर पर बच्चों को वर्कशीट देने से। इन वर्कशीट को बच्चे अपने अभिभावकों की मदद से पूरा कर सकते थे। इसके लिए अभिभावकों या बच्चों ने हर हफ़्ते स्कूल से वर्कशीट लीं और सामुदायिक शिक्षक ने किए जाने वाले कार्य के बारे में उनसे चर्चा की। प्रत्येक बच्चे ने क्या सीखा इसका आकलन करने के लिए उन्होंने पिछले हफ़्ते की वर्कशीट इकट्ठा कीं। वर्कशीट इस तरह डिज़ाइन की गई थीं कि संरचित और असंरचित गतिविधियों के बीच सन्तुलन बना रहे। मसलन यदि गणित के सवाल दिए गए थे तो बच्चों को कहानी लिखने और चित्र बनाने या किसी कहानी में ख़ुद को एक किरदार के रूप में कल्पना करने के अवसर देना था। उन्हें अपनी कल्पना को काग़ज़ पर उतारने या दी गई आकृतियों से पहेलियाँ बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया था।

राफिया (6 वर्ष) और मरियम (3 वर्ष) क्रमश: स्कूल और आँगनवाड़ी में नामांकित हैं। बच्चों को एनसीईआरटी की बरखा शृंखला से 'मिली का गुब्बारा' नाम की एक कहानी पढ़ने के लिए दी गई थी। आमतौर पर बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है कि कहानी सुनने के बाद वे अपनी मर्ज़ी के चित्र बनाएँ। राफिया ने मरियम को कहानी पढ़कर सुनाई और उसे चित्र बनाने के लिए कहा। फिर उसने मरियम द्वारा बनाए हुए चित्र पर 'गुब्बारा' लिख दिया क्योंकि शिक्षक हमेशा अभिभावकों से कहते हैं कि बच्चा चित्र के बारे में जो भी कहे, उसे वे चित्र के ऊपर लिख दें। यह उद्गामी साक्षरता (Emergent Literacy) की एक ख़ास गतिविधि है। मरियम को कहानियाँ सुनाते हुए राफिया अपने पढ़ने और लिखने का भी अभ्यास कर लेती है।

पाँचवीं कक्षा के इज़ान और तीसरी कक्षा के नूर मोहम्मद उन अधिकांश बच्चों में से हैं जो अपना काम पूरा करने के लिए पार्क में बैठते हैं। ज़्यादातर बच्चों के घरों में पर्याप्त जगह नहीं है। बड़े होने के नाते, इज़ान दो अंकों के जोड़ में 'हासिल' (CARRY-OVER) जैसी अवधारणाओं को सीखने में नूर की मदद करता है। इस तरह काम बिना किसी रुकावट के आसानी से खेल में बदल जाता है और इसमें दोनों बराबरी से शामिल होते हैं।

आँगनवाड़ी केन्द्रों में दाख़िल बच्चों के लिए एक अलग रणनीति अपनाई गई है। शिक्षक प्रत्येक सप्ताह एक तयशुदा दिन पर हर परिवार के साथ उन गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हैं जिन्हें अभिभावक अपने बच्चों के साथ घर पर कर सकते हैं। शिक्षक उन्हें कोई कहानी पढ़कर या बच्चों के साथ गतिविधियाँ करके भी दिखाते हैं। अभिभावकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे रोज़ाना कुछ समय बच्चों के साथ कार्य करते हुए बिताएँ। शिक्षक प्रश्नों के उत्तर और स्पष्टीकरण देने के साथ के साथ फ़ीडबैक भी लेते हैं।

बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में उपयोग करने के लिए रंग, चॉक, ड्राइंग पेपर और मिट्टी (क्ले) सहित कई सामग्रियाँ दी जाती हैं। प्रत्येक सप्ताह अभिभावकों के साथ लगभग दस गतिविधियों की चर्चा की जाती है। इनमें से वे प्रत्येक दिन बच्चों के साथ दो गतिविधियाँ करते हैं। बच्चों को एक

कहानी-पुस्तिका, एक कविता और वर्तमान थीम से सम्बन्धित दो वर्कशीट भी दी जाती हैं। शिक्षक इस 'पैकेज' के बारे में अभिभावक या बड़े भाई-बहन को बताते हैं।

अभिभावकों को अपने निकटतम परिवेश को देखने और इस बात पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि यह सीखने में कैसे मदद कर सकता है। अभिभावकों द्वारा क्रम से जमाने (Seriation), मिलान करने, छँटाई करने और पैटर्न बनाने की गतिविधियों के लिए बर्तनों, सब्ज़ियों और कभी-कभी तो जूते-चप्पलों का भी उपयोग किया जाता है। रोटियाँ बनाते समय या सब्ज़ियाँ छाँटते समय गिनती सिखाई जाती है। सन्तुलन कौशलों का अभ्यास करने के लिए सभी प्रकार की लाइनें बनाने के लिए फ़र्श का उपयोग किया जाता है। अभिभावकों को अपने अनुभवों के साथ-साथ दी गई उद्गामी साक्षरता की वर्कशीट और सरल चित्रों के माध्यम से कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

### विचार

यह कार्यक्रम जारी रहेगा कम-से-कम तब तक जब तक शैक्षणिक संस्थान खुल नहीं जाते। हालाँकि यह समय अभिभावकों और बच्चों के लिए कठिन रहा है, पर हमने इसे बच्चों की शिक्षा से अभिभावकों के जुड़ाव के सुगमीकरण और शिक्षकों द्वारा उनका भरोसा जीतने के एक अवसर के रूप में भी देखा। यह एक ऐसा कार्य है जिसे हम अतीत में सफलतापूर्वक नहीं कर पाए थे। अपने बच्चों के सीखने से जुड़ने के लिए अभिभावकों का उत्साह हमारे लिए काफ़ी ख़ुशनुमा अनुभव रहा। यह अनुभव इस धारणा को ख़ारिज करता है कि वंचित परिवारों के लोग अपने बच्चों की पढ़ाई पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते।

सीखने के कई सारे तौर-तरीक़े रोज़मर्रा के जीवन में गुँथे हुए हैं और शिक्षक इनके दायरे का विस्तार करने में एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसका एक उदाहरण यह है कि अभिभावक कई आयु-वर्ग के बच्चों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं जिनमें बड़े भाई-बहन अभिभावकों की देखरेख में या इसके बिना छोटे बच्चों की मदद कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर एक अभिभावक शिक्षक (जो बीमारी के चलते अनुपस्थित थीं) की अनुपस्थिति के बारे में पूछताछ करने और उस सप्ताह की गतिविधियों को लेने के लिए उनके घर गए। गतिविधियाँ करवाने के लिए अधिकांश अभिभावकों का अपने बच्चों के साथ बैठना सीखने की प्रक्रिया से उनके सक्रिय जुड़ाव का संकेत है। गतिविधियों को इस तरह से डिज़ाइन करने का उद्देश्य इस विचार को पुख़्ता करना भी था कि औपचारिक साक्षरता ही एकमात्र तरीक़ा नहीं है जिसके ज़रिए अभिभावक अपने बच्चों के सीखने से जुड़ सकते हैं। अनौपचारिक अन्त:क्रिया और बच्चों के साथ मस्ती भी सीखने का एक तरीक़ा है।

हालाँकि हम महामारी के जल्द ही समाप्त होने और स्कूलों और आँगनवाड़ियों के फिर से खुलने की राह देख रहे हैं, पर हमें उम्मीद है कि अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों का सक्रिय सहयोग (जो कि इस समय की विरासत है) आने वाले समय में भी जारी रहेगा।





*अपने बच्चों के साथ कार्य करने के लिए अभिभावकों का शिक्षण*

* आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर (AKTC) और आगा खान फ़ाउण्डेशन (AKF)



**वर्धना पुरी** दिल्ली विश्वविद्यालय में पीएचडी स्कॉलर हैं और प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर आधारित प्रोजेक्ट की सलाहकार हैं। उनसे **vardhna@gmail.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



**ज्योत्स्ना लाल** प्रोग्राम्स फॉर द आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर निज़ामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव की निदेशक हैं। वह निजामुद्दीन बस्ती में सामाजिक विकास की पहलों को संचालित करती हैं। उनसे **jyotsna.lall@akdn.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है।



**हैदर मेहदी रिज़वी** आगा खान ट्रस्ट फॉर कल्चर निजामुद्दीन अर्बन रिन्यूअल इनिशिएटिव में कार्यक्रम अधिकारी (शिक्षा) हैं। उनसे **hydermehdi.rizvi@akdn.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी